ललाटोदयमाभुग्नं पल्लवस्निग्धपाटला ।

बिभ्रती श्वेतरोमाटं सन्ध्येव शशिनं नवम् ।।83।।

अन्वय पल्लवस्निग्धपाटला ललाटोदयं आभुग्नं श्वेतरोमाटं बिभ्रती सन्ध्या इव (स्थिता नन्दिनी आवृवत्ते)।

अनुवाद जिस प्रकार नवीन किसलय के समान कोमल तथा लाल रंग वाली सन्ध्या पश्चिम दिशा में टेढ़े नवीन चन्द्रमा को धारण करती है उसी प्रकार कोमल किसलय के समान चिकनी तथा लाल रंग वाली नन्दिनी कुछ टेढ़े सफेद रंग के बालों के चिन्ह को (नवीन चन्द्र के समान) मस्तक पर धारण करती हुई (वन से आश्रम को लौटी)।

टिप्पणियां

विशेष इस श्लोक में तथा अगले दो श्लोकों में नन्दिनी गौ का वर्णन है।

ललाटोदयम् ललाटे उदयः यस्य सः (बहुव्रीहि) तम्। 'श्वेतरोमांकम्' का विशेषण। मस्तक पर उभरे हुए, मस्तक पर शोभायमान।

आभुग्नम् आ धातु भुज् क्त । कुछ टेढ़ा।

श्वेतरोमाटम् श्वेतानि च तानि रोमाणि इति (कर्मधारय), श्वेतरोमाणि एव अट इति श्वेतरोमाटं तम् (रूपक कर्मधारय)।

पल्लव पल्लववत् स्निग्धा चासौ पाटला च (कर्मधारय)। कोमल किसलय के समान चिकनी (कोमल) लाल रंग वानी नन्दिनी तथा सन्ध्या दोनों से सम्बद्ध विशेषण है।

बिभ्रती धातु भृ, शतृ ङीप् (स्त्रीलिंग), धारण करती हुई।

विशेष प्रस्तुत श्लोक में उपमा का सौष्ठव ध्यान देने योग्य है। कालिदास ऐसे उपमानों को चुनते हैं जो उपमेय के सर्वथा अनुरूप होते हैं। यहां उपमेय 'धेनु' का उपमान 'संध्या' सर्वथा उपयुक्त है। जैसे उपमान 'संध्या' उज्जवल और लाल होती है वैसे ही उपमेय नन्दिनी भी कोमल और लाल रंग की है। गौ के मस्तक पर कुछ टेढ़ा सफेद बालों का चिन्ह था जैसे सन्ध्या के आरम्भ में दूज के शुभ्र तथा टेढ़े चन्द्रमा का चिन्ह होता है। इस प्रकार 'सन्ध्या' 'नन्दिनी' का अनुरूप उपमान है। सन्ध्या लाल रंग की है, नन्दिनी भी लाल रंग की है। संध्या द्वितीय के वक्र चन्द्र को धारण करती है। नन्दिनी ने भी सफेद बालों के टेढ़े चिन्ह को धारण किया है। अतः दोनों की तुलना उपयु है। गौ के 'श्वेत रोमांक' की तुलना 'नये शशि' है तथा गौ की तुलना सन्ध्या से है। देखिए.